Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम और उसके सौ उपयोग

लेखक—

पं० गंगाप्रसाद गांगेय

प्रकाशक—

नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो,

हज़रतगंज, लखनऊ।

Printed by K. D. Seth, at the N. K. Press, Lucknow. 1939.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम और उसके सौ उपयोग

लेखक—

पं० गंगाप्रसाद गांगेय

प्रकाशक—

नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो,

हज़रतगंज, लखनऊ।

Printed by K. D. Seth, at the N. K. Press, Lucknow. 1939.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीम और उसके सौ उपयोग

(नीम के गुण-धर्म)

नीम भारतवर्ष का वह उपयोगी वृक्ष है, जिससे छोटे-बड़े सभी परिचित हैं। यह देश के प्रायः प्रत्येक भाग में बहुतायत से पाया जाता है। शाखा-प्रशाखाओं से युक्त—सघन—नीम का वृक्ष कितना सुहावना लगता है, यह बताने की आवश्यकता नहीं। नीम की शीतल छाया कितनी सुखद और तृप्तिकर होती है, इसका अनुभव सभी को होगा। नीम की लकड़ी मकान बनवाने के काम में कितनी मज़बूत और टिकाऊ होती है, यह सभी गृहस्थ जानते हैं। परन्तु आँखों के सामने सदैव दीखनेवाले इस वृक्ष में कितने गुण हैं, इसके अंग-प्रत्यंग का भिन्न-भिन्न रोगों में कैसा सफल उपयोग होता है—इसे बहुत कम लोग जानते हैं।

नीम का अंग-प्रत्यंग कटु होता है। परन्तु इसकी कटुता में गुणों की वह मिठास निहित है, जिसके लिये मानव जाति पर नीम का अपरिमित आभार है। उर्दू की एक लोक-प्रचलित कहावत है—'नीम-हकीम';

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो कि अधकचरे वैद्य-हकीमों के लिये प्रयुक्त होती है; क्योंकि 'नीम' का अर्थ फ़ारसी में 'आधा' होता है। परन्तु यदि नीम के वृक्ष को ही नीम-हकीम कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी; क्योंकि अकेली नीम सैकड़ों रोगों की दवा है। नीम में वह कीटाणुनाशक शक्ति मौजूद है कि यदि निरन्तर नीम की छाया में शयन किया जाय तो सहसा कोई रोग होने की सम्भावना न हो। हाँ, सायंकाल नीम के नीचे शयन करने का निषेध है। एक जनश्रुति है कि एक भला चंगा मनुष्य कार्यवशात् अपने गाँव से कई मील दूर एक वैद्य के पास गया। वह व्यक्ति जिस सड़क होकर गया था, उसके एक ओर एकदम बबूल के वृक्ष थे और दूसरी ओर नीम के। वह मनुष्य बबूल के वृक्षों की छाया में होकर गया। वैद्य के पास पहुंचते-पहुँचते वह रोगाक्रान्त हो गया। वैद्य ने रोग का लक्षण और कारण जानकर उसे निर्देश किया कि वह लौटती बार नीम के वृक्षों की छाया होकर जाय। उस व्यक्ति ने वैसा ही किया और घर पहुँचते-पहुँचते स्वस्थ हो गया। अस्तु!

सन् १९३५ ई० में महात्मा गाँधी ने नीम की पत्तियाँ खाकर उसके गुणावगुण जानने का उद्योग किया था। उन्होंने नीम के सेवन से बहुत-से लाभ बताये और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बताया कि नीम के सेवन से किसी प्रकार की हानि की आशंका नहीं की जा सकती। इसी सिलसिले में महात्माजी ने कूनूर के न्यूट्रीजन रिसर्च डाइरेक्टर डॉक्टर इक्राइड के पास नीम की पत्तियों के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न भेजे थे, जिनके उत्तर में उक्त डॉक्टर महोदय ने लिखा है—

"हमने अपनी प्रयोगशाला में नीम की पत्तियों का विश्लेषण किया है। पहले जिन अनेक हरी पत्तियों का विश्लेषण किया गया है, उनके मुक़ाबले में इन पत्तियों में पोषक तत्त्व अधिक मात्रा में मौजूद हैं। पकी हुई पत्तियाँ और कोंपलें दोनों में ही प्रोटीन, कैलसियम, लोहा और विटामिन ए. पर्याप्त मात्रा में होते हैं। और इस दृष्टि से नीम की पत्तियाँ चौलाई, धनियाँ, पालक तथा दूसरी कई भाजियों से श्रेष्ठ हैं।"

वसन्त ऋतु में नीम में पतझड़ होता है और नये पत्ते निकलते हैं। चैत में नीम फूलती है और ज्येष्ठ-आषाढ़ में नीम के फल पकते हैं। चैत्र मास में नीम की कोमल पत्तियों का सेवन बड़ा गुणकारी होता है। एक स्वास्थ्य-सम्बन्धी कहावत में, जिसमें बतलाया गया है कि किस मास में किस वस्तु का सेवन करना चाहिए, चैत्र में नीम की कोमल पत्तियाँ खाने का निर्देश किया गया है। वह कहावत यों है—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सावन हरैं भादों चीत। क्वार मास गुड़ खायो मीत।
कातिक मूरी अगहन तेल। पूस में करै दूध से मेल।
माघ मास घिव खिचरी खाय। फागुन उठके प्रात नहाय।
चैत मास में नीम बेसहनी। बैसाखै माँ खाय जड़हनी।
जेठ मास जो दिन को सोवै। वोकर ज्वर असाढ़ माँ रोवै॥"

दन्त-रक्षा के लिए, जिस पर बहुत कुछ स्वास्थ्य-संवर्धन निर्भर है, नीम के दातून की उपयोगिता प्रत्येक व्यक्ति जानता है। कहा भी गया है—

"नीम दतूनी जे करैं, भूनी हर्र चबायँ।
दूध बियारी नित करैं, तिन घर बैद न जायँ॥"

आयुर्वेद के मतानुसार नीम कटु, शीतल, कफ, व्रण, वमन, कृमि, सूजन का नाश करनेवाली, पित्त-दोष और हृदय के दाह को शान्त करनेवाली है। वात, कुष्ठ, विष, खाँसी, ज्वर, अरुचि, रुधिर-विकार, प्रमेह को दूर करनेवाली और केशों को हितकारी है।

किसी-किसी नीम के पेड़ से एक प्रकार का फेन-दार पानी, जिसे नीम का मद व निम्बजल कहते हैं, गिरने लगता है। यह निम्बजल रक्तशोधक और अत्यन्त गुणकारी होता है।

नीम का अंग-प्रत्यंग—पत्तियाँ, छाल, लकड़ी, फूल, फल—उपयोगी और औषधयुक्त होता है। यहाँ भिन्न-भिन्न रोगों में नीम के प्रयोग लिखे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१. ज्वर में—

(१) नीम की सींकें एक तोला, कालीमिर्च ७ नग—दोनों को पीसकर पानी के साथ पीने से सब प्रकार का ज्वर दूर होता है।

(२) नीम के फल की गिरी, ज़ीरा सफ़ेद, पीपल—सब चीज़ें समान भाग लेकर, करेले के रस में २४ घंटे खरल करके सुखा ले। सूख जाने पर पुनः करेले के रस में घोट-सुखाकर कपड़े में छानकर रख ले। इस चूर्ण को चढ़े हुए ज्वर में सलाई द्वारा सुरमे की तरह आँखों में आँजने से ज्वर उतर जाता है।

(३) नीम-पत्र के दो तोले रस को गरम लोहे से छौंककर पीने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

२. मलेरिया में—

(१) नीम की पत्तियाँ १ तोला, भुनी हुई फिटकिरी ६ माशा—दोनों चीज़ें पानी के साथ पीस कर १॥-१॥ रत्ती की गोलियाँ बना ले। ज्वर आने के दो घंटे पूर्व एक गोली, फिर एक घंटे बाद एक गोली खा लेने से मलेरिया ज्वर रुक जाता है।

(२) नीम की छाल, त्रिफला, अमलतास का गूदा, पटोलपत्र, मुनक्का, नेत्रबाला एक-एक तोला, मिश्री ६ माशे—सबका क्वाथ कर तीन समान भाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर, ६-६ माशा शहद मिलाकर, दिन में तीन बार पीने से मलेरिया, वात-पित्तज्वर दूर होकर मलावरोध दूर होता और भूख लगती है।

(३) नीम की कोंपल ६ तोले, श्वेताभस्म ३ तोले—दोनों चीज़ें एक में खरलकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना ले। एक गोली मिश्री तथा शीतल जल के साथ देने से मलेरिया ज्वर शर्तिया दूर हो जाता है।

३. आतपज्वर में—

५ तोले नीम के पंचांग का क्वाथ २ तोले मिश्री मिलाकर पीने से लू लगने पर आया हुआ ज्वर दूर हो जाता है।

४. इन्फ़्ल्युएंज़ा में—

नीम की पत्तियाँ २ तोले, गिलोय २ तोले, तुलसी की पत्तियाँ २ तोले, हुरहुर की पत्तियाँ २ तोले, कालीमिर्च ६ माशे—सब चीज़ें बारीक पीसकर, जल में खरलकर, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना ले। तीन-तीन घंटे के अन्तर से एक गोली गरम जल के साथ देने से इन्फ़्ल्युएंज़ा में यथेष्ट लाभ होता है।

५. हैज़ा में—

नीम की सींकें ५ नग, इलायची बड़ी १ नग,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लौंग ५ नग, नारियल की जटा की भस्म २ रत्ती—सब चीज़ें एक छटाँक जल में बारीक पीसकर थोड़ा गर्म कर ले। दो-दो घंटे के अन्तर से उपर्युक्त औषध पिलाने से हैज़े में बहुत लाभ होता है।

६. मंदाग्नि में—

पकी हुई निबौलियाँ नित्य खाने से मंदाग्नि और रक्त-विकार में आशातीत लाभ होता है।

७. ज़ुकाम में—

नीम की पत्तियाँ १ तोला, कालीमिर्च ६ माशे—दोनों चीज़ें नीम के डंडे से बारीक घोटकर चने बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा ले। गर्म जल के साथ तीन-चार गोलियाँ खाने से ज़ुकाम दूर हो जाता है।

८. प्लेग में—

(१) प्लेग के दिनों में नीम का तेल लगाने और नीम की पत्तियों की धूनी देने से प्लेग में रक्षा होती है।

(२) प्लेग में नीम की पत्ती और कालीमिर्च पीसकर पीना अत्यंत हितकारी है।

(३) नीम की पत्ती १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, कुटकी एक भाग, आक की जड़ की छाल एक भाग, तुलसीपत्र का चूर्ण २ भाग, कुचला आधा भाग—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब औषधों को एक साथ खरलकर कपूर-मिश्रित जल के संयोग से २-२ रत्ती की गोलियाँ बना ले। एक-एक गोली गरम जल के साथ, २-२ घंटे के बाद देने से प्लेग में आशातीत लाभ होता है।

९. वमन में—

नीम की सींकें ७ नग गरम राख में भुलभुलाकर, २ बड़ी इलायची और ५ कालीमिर्च के साथ बारीक पीसकर, आधी छटाँक पानी के साथ पीने से वमन होना बन्द होता है।

१०. अम्लपित्त में—

सोंठ, मिर्च और नीम की छाल—तीनों का चूर्ण कर, एक तोला चूर्ण नित्य प्रातःकाल सेवन करना अम्लपित्त में अतिशय हितकारी है।

११. हिचकी में—

नीम की दो सींकें १ तोला पानी में पीसकर, मोरपंख का जलाया हुआ चन्दा एक रत्ती मिलाकर पीने से हिचकी बन्द हो जाती है।

१२. उदर-कृमि में—

(१) नीम की पत्तियों का स्वरस शहद मिलाकर चाटने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२) नीम की पत्तियाँ हींग के साथ खाने अथवा नीम की पत्तियाँ कालीमिर्च के साथ सुबह के वक़्त पीने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) नीम के फूल पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

१३. दस्त अधिक आने पर—

नीम की पत्तियों को पीस-छानकर शक्कर मिलाकर पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

१४. पेचिश में—

नीम की अँतरछाल तवे में रखकर नीचे आग कर जला डाले और पीसकर चूर्ण कर ले। एक तोला चूर्ण दही के साथ खाने से पेचिश दूर होती है।

१५. बवासीर में—

(१) नित्यप्रति नीम का ५ बूँद तेल खाना और मस्सों पर नीम का तेल लगाना बवासीर में हितकारी है।

(२) नीम की अँतरछाल ३ माशे और गुड़ ६ माशे एक में मिलाकर नित्य सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।

(३) नीम के फलों की मींगी एक से आरम्भ कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११ तक, मूली के रस या ताज़े पानी के साथ निग-लने से रक्तार्श में यथेष्ट लाभ होता है।

(४) रक्तार्श में रक्तस्राव को रोकने के लिए प्रातःकाल ३-४ निबौलियों का सेवन करना महर्षि दयानन्द का अचूक और अनुभूत योग है।

(५) शुद्ध रसौत २ तोले, बकायन के बीजों की मींगी २ तोले, हरड़ का छिलका २ तोले, नीम के बीज की मींगी १ तोला—सबको बारीक पीसकर कुकरौंधा के रस में घोटकर चने बराबर गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातःकाल एक गोली ताज़े पानी के साथ निगलने से बवासीर में बहुत लाभ होता है।

(६) नीम की गिरी, मुसब्बर, रसौत—तीनों चीज़ें एक-एक तोला ले खरल कर झड़बेरी के बराबर गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातःकाल एक गोली गौ के मट्ठा के साथ लेने से कुछ दिन में ख़ूनी बवासीर अवश्य दूर हो जाती है।

१६. प्लीहा में—

नीम की मींगी, अजवाइन, नौसादर—तीनों समान भाग लेकर चूर्ण कर ले। नित्य प्रातःकाल ३ माशे चूर्ण ताज़े पानी के साथ लेने से पिलही नष्ट हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७. मसूरिका (चेचक) में—

(१) नीम की दो सींकें एक तोला जल के साथ पीसकर तीन दिन बच्चे को पिलाने से चेचक नहीं निकलती। कदाचित् निकल भी आवे तो बहुत ज़ोर नहीं करती।

(२) नीम की कोंपलें और मुलहठी दोनों समान भाग ले पीसकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना ले। सुबह-शाम २-२ गोली ठंडे पानी के साथ देने से बालक को चेचक निकलने की सम्भावना कम रहती है।

(३) नीम की पत्तियाँ ११ नग, कालीमिर्च ५ नग—दोनों को आध पाव जल में पीसकर पिलाने से बच्चों को सहसा चेचक नहीं निकलती।

(४) नीम के बीज, हल्दी, बहेड़े की मींगी—समान भाग लेकर ठंडे पानी में घोटकर, सुबह-शाम पिलाने से चेचक निकलने की आशंका नहीं रहती।

(५) चेचक के दानों पर नीम की लकड़ी चन्दन की भाँति घिसकर लेप करना और रोगी के ऊपर नीम की हरी पत्तियों का मूर्छल करना हितकारी है।

(६) नीम की पत्तियाँ, खैर की छाल, सिरस की छाल, गूलर की छाल सबको पीसकर चेचक के दानों पर लगाने से बहुत लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८. गठिया में—

नीम के कोमल पत्र, स्वर्णक्षीरी का पंचांग, सँभालू के पत्ते, अमरबेल, काली मकोय के पत्ते—सबको पीसकर गोमूत्र में पकावे। पक जाने पर छानकर गठिया में मलने से अत्यंत लाभ होता है।

१९. खाँसी-दमा पर—

नीम की पत्तियाँ, साँभर नमक, भाँग सूखी, अड़ूसा, कच्चे चना ५-५ तोला लेकर कूट-पीसकर टिकिया बना ले और एक मिट्टी के बर्तन में बन्द कर, कपरौटी कर दस सेर जंगली कंडों की आग में फूँक दें। ठंडा हो जाने पर उतारकर पीस ले और शीशी में रखे। इसमें से रत्ती-डेढ़ रत्ती दवा सुबह-शाम शहद के साथ चाटने से श्वास, कास, बलग़मी खाँसी और दमा में लाभ होता है।

२०. पथरी में—

१२ तोले नीम की पत्तियों को पीसकर दो सेर जल में औटावे, चतुर्थांश पानी जल जाने पर उतारकर उसका बफारा लेने से इन्द्रिय से पथरी गिर जाती है।

२१. सूज़ाक में—

(१) चार तोले नीम की छाल में ढाई सेर जल मिलाकर मिट्टी के पात्र में पकावे। थोड़ा पानी अवशेष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहने पर छान ले और उस क्वाथ को फिर कड़ाही में चढ़ाकर पकावे। २।। तोले कलमीशोरा थोड़ा-थोड़ा कर डालता जाय और नीम की लकड़ी से डुलाता जाय। सब पानी जल जाने पर उतारकर सुखा ले और पीसकर कपड़े से छान ले। नित्य दो रत्ती यह चूर्ण गाय के दूध की लस्सी के साथ लेने से सूज़ाक शीघ्र अच्छा हो जाता है।

(२) नीम की पत्तियों के रस में १ माशा तूतिया घोटकर सुखा ले और उसे कौड़ी के अन्दर भर दे। फिर कौड़ी को कोयलों की दहकती हुई आग पर रखे। जब कौड़ी जल जाय तो निकालकर चूर्ण कर ले। २ रत्ती चूर्ण गाय के दूध के साथ नित्य सेवन करने से सूज़ाक में शीघ्र ही लाभ दीखने लगता है।

(३) नीम की अँतरछाल, बबूल का गोंद, मखाना——सब चीज़ें आध-आध पाव ले। पहले गोंद को गाय के घी में भून ले। फिर सबको कूट-छानकर, नित्य सुबह-शाम ६-६ माशे दवा अर्ध भाग पानी मिले हुए गौदुग्ध के साथ कुछ दिनों तक खाने से सूज़ाक नष्ट हो जाता है।

२२. प्रमेह में—

नीम की पत्तियों के २ तोले रस में एक तोला मिश्री मिलाकर नित्य पीने से प्रमेह अच्छा हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२३. हल्दिया प्रमेह में—

नीम की छाल का रस शहद मिलाकर पीने से हल्दिया प्रमेह दूर होता है।

२४. सिक्तामेह और मधुमेह में—

नीम की छाल का काढ़ा पिलाने से सिक्तामेह और मधुमेह आराम होता है।

२५. रक्तस्राव और प्रदर में—

नीम की छाल के रस में ज़ीरा मिलाकर पीने से रक्तस्राव और प्रदर दूर होता है।

२६. अण्डवृद्धि में—

नीम की पत्तियाँ, अमरबेल, हुरहुर की पत्तियाँ, ऊँट की मेंगनी—सब चीज़ें समान भाग ले मनुष्य के मूत्र में पकाकर लेप करने से अण्डवृद्धि दूर होती है।

२७. वीर्यपतन में—

नीम की दो तोले पत्तियाँ पीसकर टिकिया बनाकर गाय के ५ तोले घी में डालकर जला डाले। इस प्रकार सिद्ध किये हुए घी का नित्य सेवन करने से वीर्यपात होना बन्द होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२८. स्तम्भन के लिए—

नीम की मींगी और धतूरे के बीजों का पाताल यन्त्र द्वारा अलग-अलग तेल निकाल ले। दोनों तेल समभाग एक में मिलाकर, तेल के बराबर पारा मिलाकर दिन भर खरल करे। फिर उसे शीशी में भरकर खारी भूमि में गाड़ दे। १५ दिन बाद निकाल ले। इस औषध को थोड़ा-सा पैर के तलवे में लगा ले। मुँह में कड़ुवाहट मालूम पड़ने पर संभोग करने से देर में वीर्यपात होता है।

२९. वृद्धावस्था में शक्तिवृद्धि के लिए—

नीम का फूल, फल, पत्तियाँ, गोंद, छाल, त्रिफला, काला ज़ीरा, सेंधा नमक, छोटी पीपरि, नीलकण्ठी की पत्ती—प्रत्येक चीज़ ४-४ तोले लेकर, अड़ूसा की पत्तियों में खरल करके ३६० गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातःकाल एक गोली ताज़े जल के साथ लेने से वृद्धावस्था में भी युवावस्था के समान बल का संचार होता है। नमक, दूध, दही, खटाई से परहेज़ रखे।

३०. कामोत्तेजन के लिए—

मेहमिहिर तैल—अनार की छाल सवा तीन सेर, गिलोय सवा तीन सेर, भूमिआँवला सवा तीन सेर—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब चीज़ों को कूटकर ३२ सेर जल में क्वाथ करे। ८ सेर जल रह जाने पर उतारकर छान ले। फिर क्वाथ में शुद्ध तिल का तेल दो सेर, गाय का दूध एक सेर, नीम की छाल, अनार का बक्कल, चिरायता, गोखरू, रेणुका, बेल की छाल, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, जामुन की छाल, आम की छाल, दाख, तगर—ये सब चीज़ें २॥-२॥ तोले मिलाकर धीमी आँच से पकावे। तेलमात्र शेष रह जाने पर उतार ले और शीतल हो जाने पर छानकर रख ले। इस तैल के लगाने से लिंगेन्द्रिय की शिथिलता, पैरों की जलन, शिरोदाह, कृशता दूर होकर कामेच्छा प्रबल हो जाती है।

३१. अर्द्धाङ्ग और सुस्ती में—

नीम की मोटी जड़ लेकर उसे खोखला करे। उसमें सिंगरफ़ रखकर ऊपर से नीम का चूरा भरकर कपड़मिट्टी कर १० सेर जंगली कंडों में फूँक दे, भस्म तैयार हो जायगी। अर्द्धांग और सुस्तीवाले को पान में आधी रत्ती भस्म देने से दो-तीन सप्ताह में अवश्य लाभ होता है।

३२. गर्भस्थापन-औषध—

नीम, कुटकी, हरड़, बला, गंगेरन, अमोघा, गेंदा, सफ़ेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावर—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन औषधों को पुष्य नक्षत्र रविवार के दिन लाकर, इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकावे और दाहिने कान तथा दाहिने हाथ में धारण करे। इन्हीं औषधों द्वारा सिद्ध किये हुए दूध-घी का सेवन करे तथा इन्हीं से औटाये हुए जल में प्रत्येक पुष्य नक्षत्र में स्नान करे, तो अवश्य गर्भ स्थिर हो जाता है।

३३. शीघ्रप्रसव के लिए—

नीम की जड़ स्त्री की कटि में बाँधने से प्रसव शीघ्र हो जाता है। प्रसव हो जाने पर जड़ को खोल देना चाहिए।

३४. योनि-शूल पर—

निबौली और एरण्ड के बीज का गूदा नीम की पत्तियों के रस में पीसकर लेप करने से योनि की पीड़ा दूर होती है।

३५. भग-संकोचन-प्रयोग—

बकाइन की छाल सुखाकर पीसकर रखने से योनि सिकुड़कर संकीर्ण हो जाती है।

३६. दाह में—

छाती, पेट या पिंडलियों में जलन होती हो तो नीम की पत्तियों पर ठंडा पानी छिड़ककर, जलनवाले स्थान पर रखने से जलन शान्त हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३७. मूत्रदाह में—

नीम की सींकों और पत्तियों का रस २॥ तोले लेकर एक छटाँक शर्बत उन्नाब में मिलाकर पीने से मूत्रदाह और मूत्रावरोध दूर होता है।

३८. हाथ-पैर की जलन में—

नीम के पंचांग को पीसकर तलुवों पर लेप करने से हाथ-पैर की जलन मिट जाती है।

३९. रक्तार्बुद में—

नीम का मूठा घिसकर लेप बना ले। एक अंगुल मोटा लेप दिन में तीन बार करने से रक्तार्बुद निश्चित रूप से अच्छा हो जाता है।

४०. तृषा में—

नीम की सींकें और मिश्री कालीमिर्च के साथ पीसकर पीने से अधिक प्यास लगने की व्याधि दूर हो जाती है।

४१. गर्मी में—

नीम की पत्तियों के रस में मिश्री मिलाकर एक सप्ताह तक सुबह-शाम पीने से कठिन से कठिन गर्मी शान्त हो जाती है।

४२. मासिकधर्म रुकने पर—

(१) नीम की छाल २ तोले, भँगरैया २ तोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोंठ ४ माशे—तीनों चीज़ें पाव भर पानी में पकावे। आध पाव पानी शेष रहने पर उतारकर शीतल करले और छान ले। इसके नियमित सेवन से मासिकधर्म खुल जाता है।

(२) नीम की सात पत्तियाँ लेकर अदरख के रस में पीसकर पिलाने और नीम की पत्तियों को थोड़े पानी में पकाकर ढोढ़ी के नीचे गुनगुना ही बाँधने से मासिकधर्म खुल जाता है।

४३. नकसीर में—

नीम की अँतरछाल को बारीक पीसकर लेप बनाकर सिर पर रखने से नाक द्वारा रक्त आना बन्द हो जाता है।

४४. रुधिर-विकार में—

(१) नित्यप्रति पकी निबौलियाँ खाने से रुधिर-विकार, मंदाग्नि और पित्त-प्रकोप दूर होते हैं।

(२) नित्य ५ बूँद नीम का तेल बताशा या ताज़े पानी के साथ खाने से रक्त-विकार नष्ट होता है।

(३) नीम के फूल, सरफोंका की पत्ती, रक्त-चन्दन, चिरायता, मजीठ, नागरमोथा, गिलोय, अतीस, इन्द्रायन की जड़, बिजैसार, हल्दी, दारुहल्दी, तिंतिड़ी, निसोथ, कत्था की छाल, अडूसा की जड़, हर्र, बहेरा, आँवला, कुटकी, परवल की बेल, पित्त-पापड़ा, बायबिड़ंग, बाकुची, बच, कूट, कुड़े की छाल,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जवासा की जड़, मुंडी प्रत्येक औषध आध-आध पाव लेकर जौकुट करके २१ सेर पानी में भिगो दे। २४ घंटे बाद भबके द्वारा अर्क खींच ले। इस अर्क को सुबह, दोपहर और शाम को २ तोले लेकर शहद के साथ सेवन करने से सब प्रकार का रक्त-विकार दूर होता है।

४५. खुजली में—

(१) खुजली में नीम का तेल लगाना अत्यन्त हितकारी है।

(२) नीम की पत्ती, फूल कुसुम, स्वर्णक्षीरी के बीज, कचूर, पँवार (चकौंड़ा) के बीज, १-१ छटाँक, मिर्च १० माशे, मेंहदी के बीज, मोचरस, कच्ची सरसों २-२ छटाँक—सबको पीसकर उबटन की भाँति बना ले। इस उबटन को मलने से खुजली और शरीर की रूसी दूर होती है।

४६. दाद में—

(१) बड़ी नीम (बकाइन) का तेल लगाने से दाद शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

(२) दूधिया कत्था, नैनिया गन्धक, चौकिया सुहागा, पित्तपापड़ा, तूतिया, कलौंजी—सब चीज़ें समान भाग लेकर नीम की पत्तियों के रस में ६ घंटे घोटकर गोलियाँ बना ले दाद को खूब खुजलाकर, इन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोलियों को जल में घिसकर लगाने से पुराने से पुराना दाद ३-४ दिन में निर्मूल हो जाता है।

४७. पामा में—

(१) निम्ब-तैल—नीम की पत्तियों का रस ४ सेर, सरसों का तेल एक सेर, आक का दूध, लाल कनेर की जड़, दन्ती की जड़, कालीमिर्च १।-१। तोले लेकर, सब चीज़ें एक में मिलाकर पकावे। तेलमात्र शेष रह जाने पर उतारकर छान ले और स्वच्छ बोतल में रख ले। इस तेल के व्यवहार से पामा, अपरस, छाजन इत्यादि दूर हो जाते हैं।

(२) महातिक्तक घृत—नीम की छाल, अमलतास की छाल, सतौने की छाल, कुटकी, पाठा, नागरमोथा, अतीस, त्रिफला, पटोल, खस, सफ़ेद चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी, पदमाख, धमासा, पित्त-पापड़ा, दोनों सारिवा, इन्द्रायन की जड़, बच, सतावर, मूर्वा, गिलोय, मुरहठी, चिरायता, इन्द्रजौ, अडूसा, त्रायमाण—प्रत्येक औषध १-१ तोला लेकर, जल के साथ पीसकर कल्क बनाकर, ३ सेर ८ तोले घी में ६ सेर १६ तोले आमले का रस तथा २४ सेर ६४ तोले पानी मिलाकर मंदाग्नि से पकावे। घृतमात्र शेष रह जाने पर छानकर रख ले। सुबह-शाम यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घृत दूध में मिलाकर सेवन करने से पामा निश्चित अच्छा हो जाता है। यह घृत अत्यन्त गुणकारी होता है। इसके सेवन से बड़े-बड़े कुष्ठ भी दूर हो जाते हैं।

४८. श्वेतकुष्ठ में——

(१) नीम के मद का अर्क खिंचवाकर सुबह-शाम २॥-२॥ तोले पीने से श्वेतकुष्ठ तथा अन्य रक्त-विकार दूर होते हैं।

(२) सफ़ेद दाग़ों में लगातार कुछ दिनों तक नीम का तैल लगाने से आशातीत लाभ होता है।

(३) नीम की छाल ५ सेर, गुड़ पुराना ३॥ सेर, पीपल चूर्ण २ तोले, त्रिफला चूर्ण ६ तोले, काली-मिर्च का चूर्ण २ तोले—सब चीज़ें एकत्र कर मिट्टी के पात्र में रखकर, १६ सेर जल डालकर, पात्र का मुख स्वच्छ वस्त्र से बाँधकर रख दे। एक सप्ताह बाद ऊपर का अर्क निकालकर छान ले और बोतलों में भरकर रख दे। सुबह-शाम २ तोले अर्क समान भाग पानी मिलाकर पीने से कुष्ठ, दाद, खाज, अपरस, उपदंश, फोड़ा, फुंसी इत्यादि सब प्रकार के रक्त-विकार दूर होते हैं।

४९. रक्त-पित्त और कुष्ठ में—

नित्य ३ माशे नीम की पत्तियों का रस पीने और नीम की पत्तियाँ डालकर औटाये हुए जल से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्नान करने से भयंकर से भयंकर रक्त-पित्त और कोढ़ नष्ट हो जाता है।

५०. वात में—

लघुमंजिष्ठादि अर्क—नीम की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, त्रिफला, बच, गिलोय—सब औषधें पाव-पाव भर लेकर जौकुट कर, ६ सेर पानी में भिगोकर, २ दिन बाद भबके से शराब की भाँति अर्क उतार ले। यह अर्क नित्य सुबह-शाम २॥ तोले लेकर एक तोला शहद के साथ सेवन करने से वात-रक्त, गलित कुष्ठ तथा अन्यान्य चर्म-रोग—दाद, खाज, अपरस इत्यादि—नष्ट हो जाते हैं।

५१. व्रण में—

(१) नीम की पत्तियों को पीसकर शहद मिलाकर लगाने से बहता हुआ घाव अच्छा हो जाता है।

(२) एक तोला नीम की पत्तियों का रस, एक तोला सरसों का तेल और २॥ तोला पानी एक में मिलाकर मंदाग्नि से पकावे। तैलमात्र शेष रह जाने पर रख ले। इस तैल के लगाने से विषैला से विषैला घाव भी शीघ्र भर जाता है।

(३) धूप ४ तोले, देशी मोम ४ तोले, सिन्दूर ६ तोले, तूतिया ३ माशे, अलसी या काले तिल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का तेल एक पाव, नीम की पत्तियों का रस आध सेर। पहले नीम की पत्तियों के रस में तेल डालकर पकावे। तीन भाग रस रह जाने पर मोम डाल दे। सारा रस जल जाने पर, आग से उतारकर गरम ही गरम छानकर पत्थर के खरल में डाले और तूतिया तथा धूप बारीक पीसकर मिला दे और खरल में खूब घोटकर रख ले। घाव को पहले नीम के पानी से धोकर, इस मरहम के लगाने से घाव शीघ्र सूखकर अच्छा हो जाता है।

५२. गर्मी के फोड़े-फुंसियों पर—

नीम की छाल को घिसकर फोड़े-फुंसियों पर लगाने से साधारण फोड़े-फुंसियाँ शीघ्र अच्छी हो जाती हैं।

५३. फोड़े में—

(१) नीम की पत्तियाँ डालकर उबाले हुए पानी से फोड़ा धोना बहुत लाभदायक है।

(२) नीम की पत्तियों को बारीक पीसकर कपड़-मिट्टी कर गर्म कर लें। जब मिट्टी सुर्ख होने लगे तो नीम की लुगदी को निकालकर थोड़ा गर्म ही फोड़े में बाँध दे, तो फोड़ा पककर फूट जाता और लगातार इसी का प्रयोग करने से घाव भर जाता है।

(३) नीम की पत्तियों का रस, भाँगरे का रस, सेम की पत्तियों का रस एक-एक छटाँक, बबूल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्तियों का रस, मेंहदी की पत्तियों का रस—दोनों डेढ़-डेढ़ छटाँक, सरसों का तेल एक सेर—सब चीज़ें एक में मिलाकर, दो सेर पानी डालकर मन्दाग्नि से पकावे। केवल तेल रह जाने पर उतारकर छान ले और ऊपर से आध पाव मोम पिघलाकर डाल दे। इस मरहम के लगाने से भयंकर से भयंकर फोड़ा भी सूख-कर जल्दी ही आराम हो जाता है।

५४. नासूर में—

(१) नीम की पत्तियों के रस से चूना भिगो-भिगोकर तीन बार सुखा ले और पीसकर नासूर में भर दे। नासूर अवश्य अच्छा हो जायगा।

(२) नीम का तेल एक पाव, बहरोज़ा १ छटाँक, विशुद्ध मोम एक छटाँक। बहरोज़ा दरदरा कूटकर तैल के साथ पिघलावे। पिघल जाने पर मोम डाल दे। सब चीज़ें एक में मिल जाने पर रख ले। इस मरहम के लगाने से नासूर, भगन्दर-व्रण तथा हर प्रकार के फोड़े-फुंसियाँ दूर हो जाती हैं।

५५. मृगी में—

बरसात में नीम के वृक्ष में जो हरित वर्ण के कीट होते हैं, उन्हें पकड़कर साया में सुखा ले और उसके चौथाई भाग कालीमिर्च डालकर चूर्ण बनाकर रख ले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मृगी के दौरे के समय दो-तीन बार इस चूर्ण की नास लेने से नाक से कृमि गिरेंगे और मृगी दूर हो जायगी।

५६. सर में कृमि हो जाने पर—

नीम की पत्तियों के रस में सफ़ेद दूब का रस मिलाकर नाक में टपकाने और निबौलियाँ पीसकर सर धोने से सर के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

५७. कर्णशूल में—

नीम की पत्तियाँ दो तोले और नीलाथोथा तीन माशे पीसकर टिकिया बनावे। इस टिकिया को काले तिल के तेल में पकावे। जब टिकिया जलकर कोयला हो जाय तो छानकर रख ले। इस तेल को थोड़ा-थोड़ा कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है।

५८. कान बहने पर—

नीम की पत्तियाँ ३ तोले, सरसों का तेल ५ तोले, दोनों एक में मिलाकर जलावे। पत्तियों का अर्क़ तेल में आ जाने पर ६ माशे हल्दी का चूर्ण डालकर जलावे। फिर छानकर शहद मिलाकर रख ले। इस औषध को कान में डालने से कान का बहना तथा अन्यान्य कर्ण-रोग दूर हो जाते हैं।

५६. कान में कीड़े हो जाने पर—

नीम की पत्तियों के रस में नमक डालकर, थोड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गर्म कर कान में डालने से कान के कृमि निकल आते हैं।

६०. बहरापन में—

चार-पाँच बूँद नीम का तेल नित्य कान में डालने से बहरापन दूर हो जाता है।

६१. बालकों के कर्णस्राव में—

सरसों का तेल एक छटाँक, नीम की पत्तियों का रस १ तोला, पानी एक तोला, हल्दी ३ माशे, हींग ३ माशे, कपूर २ माशे, अफ़ीम एक माशा। हींग, हल्दी और नीम की पत्तियों को पीस लुगदी बना क्वाथ कर ले। फिर कड़ाही में तेल, पानी और क्वाथ मिलाकर आग पर रखे। तेलमात्र शेष रहने पर उतारकर थोड़े-से जल में अफ़ीम और कपूर पीसकर मिला दे। कान साफ़ करके, इस तेल को कान में डालने से बालकों का कर्णस्राव तथा कान का हर प्रकार का रोग दूर हो जाता है।

६२. नेत्रों के शोथ और खुजली में—

नीम की पत्तियाँ पानी में उबाल ले। उबले हुए जल में ६ माशे फिटकिरी डालकर नेत्रों को सेंकने से नेत्रों की सूजन और खुजली दूर होती है।

६३. परवाल में—

नीम के पानी में रुई डालकर साया में सुखा ले। सूख जाने पर बत्ती को काले तिल के तेल में जलाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काजल बना ले। इस काजल को गाय के मक्खन में मिलाकर, काँसे की थाली में काँसे की कटोरी से घोट-कर अंजन बना ले। परवाल को उखाड़कर जस्ता की सलाई से, यह अंजन आँजने से परवाल नष्ट हो जाता है।

६४. रतौंधी में—

नीम के कच्चे फल का दूध आँजने से रतौंधी दूर हो जाती है।

६५. मोतियाबिन्द में—

नीम की मींगी का चूर्ण कर रात में दो सलाई आँखों में आँजने से मोतियाबिन्द में बहुत लाभ होता है।

६६. आँख दुखने पर—

(१) नीम की पत्तियों का रस डालने से दुखती हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२) अफ़ीम एक माशा, फिटकिरी एक माशा, आँबाहल्दी २ माशे, घीकुँवार का गूदा दो माशे, रसवत एक माशा—सबका चूर्ण कर तिनपतिया की पत्ती के तीन माशे और नीम की पत्ती के एक तोला रस में डालकर पोटली बनाकर आँख में चोभा करे या सो जाने पर आँख के ऊपर लेप करे। इससे आँख का दुखना, दर्द करना और सुर्ख़ी दूर हो जाती है।

(३) विशुद्ध मिश्री ५ तोले, शुद्ध नीलाथोथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३ माशे, जस्ता-भस्म १ तोला, फिटकिरी २॥ तोले, नीम का अर्क ३ बोतल—सबको काँच के बर्तन में भिगो दे। २४ घंटे बाद काँसे के बर्तन में मंदाग्नि से पकावे। आधा रस जल जाने पर बोतल में रख ले। इस औषध के लगाने से आँख दुखना, कड़क होना, खुजलाहट, कम दीखना इत्यादि नेत्र-विकार दूर होते हैं।

६७. नेत्रांजन—

(१) नीम की हरी पत्तियाँ, मोती असली, जस्ता-भस्म, कपूर भीमसेनी, लालचन्दन का बुरादा एक-एक तोला, शुद्ध राँगे की एक पाव की एक डली—सबको एक में मिश्रित कर लोहे की कड़ाही में घोटे। जब राँगा एक छटाँक घिस जावे और अंजन बारीक हो जावे तो कपड़े से छानकर शीशी में भर ले। सुबह-शाम इस अंजन के आँजने से धुन्ध, ढरका, परवाल, दाह, दाने पड़ना इत्यादि नेत्र-विकार शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

(२) नीमपत्र, गिलोय, हरड़, नागरमोथा, आमला, कूट, दारुहल्दी, बायबिड़ंग, सेंधानमक—सब चीज़ें एक-एक तोला, सफ़ेद पुनर्नवा की जड़ २ तोले, कालीमिर्च २ माशे—सबको एक में मिलाकर ख़ूब पीसकर, बकरी के मूत्र की भावना देकर गोली बना ले। यह गोली बकरी के दूध में घिसकर लगाने से फूली, जाला और माड़ा दूर होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३) नीम की कोंपलें १० नग, जस्ता एक तोला, लौंग ३ नग, इलायची ३ नग, मिश्री एक तोला—सबको एकत्र कर खूब बारीक पीसकर शीशी में रख ले। इस अंजन के प्रयोग से आँख का दर्द और ललाई दूर होती है और लगातार इसके प्रयोग से धुन्ध, जाला इत्यादि कटकर नेत्र-ज्योति तीव्र हो जाती है।

६८. मसूढ़े फूलने पर—

मसूढ़े फूलने पर नीम के पंचांग के काढ़े से कुल्ला करना लाभदायक है।

६९. गले का दर्द—

नीम की पत्तियों को पीसकर रस निकाले। रस को गर्म कर शहद मिलाकर गरारे करने से गले का दर्द दूर होता है।

७०. आधाशीशी के दर्द में—

नीम की पत्तियाँ २५, कालीमिर्च २५, चावल के दाने २५—तीनों को एक में पीसकर चूर्ण कर ले। मस्तक के जिस भाग में दर्द होता हो, सूरज निकलने के पहले २-२ रत्ती इस चूर्ण की नास लेने से वर्षों का पुराना आधाशीशी का सरदर्द दूर हो जाता है।

७१. दन्तमंजन—

(१) नीम की लकड़ी के कोयले को बारीक पीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर दाँतों पर मलने से दाँत स्वच्छ और नीरोग रहते हैं।

(२) नीम की छाल, बबूल की छाल, मौलसिरी की छाल, सिरस के बीज, सुपारी जली, बादाम के छिलके जले हुए, प्रत्येक ५ तोले, खरिया मिट्टी १० तोले, बहेरा २ तोले, कालीमिर्च ३ माशे, लौंग ६ माशे, पिपरमेण्ट ६ रत्ती—सबको पीस-छानकर रख ले। इस दन्तमंजन के प्रयोग से दाँतों की पीड़ा, टीस होना, पानी लगना, पीब आना इत्यादि व्याधियाँ दूर हो जाती हैं और दाँत स्वच्छ तथा चमकीले हो जाते हैं।

७२. सुन्नबहरी में—

पुराना गुड़ एक सेर, नीम की पत्तियाँ, फूल और छाल एक-एक सेर—सबको मिलाकर, एक घड़े में भर-कर २० सेर पानी डाल बन्द कर रख दे। १५ दिन बाद निकालकर छान ले। नित्य सुबह-शाम एक-एक तोला दवा पीने से सुन्नबहरी मिट जाती है।

७३. असमय में केश पकने पर—

नीम की मींगी को एक सप्ताह भाँगरे के रस में घोटकर सुखा ले और पातालयन्त्र द्वारा तेल निकाल ले। सुबह-शाम इस तेल की तीन बूँद नास लेने से असमय में श्वेत हुए केश पुनः काले हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७४. केश झड़ने और श्वेत होने पर——

नीम की पत्तियों को पानी में उबाल ले। पानी ठंडा हो जाने पर पत्तियों को अलग कर, सर धोने से बालों का झड़ना बन्द होता है, बाल काले हो जाते हैं और सर में फुंसियाँ नहीं निकलतीं।

७५. सर्प-विष न चढ़ने के लिए——

चैत्र मास में मसूर की दाल के साथ नीम की पत्तियाँ खाने से विषैले से विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

७६. सर्प काटे की पहचान——

सर्पदंशित व्यक्ति को नीम की पत्तियाँ कड़वी नहीं मालूम होतीं। विष उतर जाने पर कड़वी मालूम होने लगती हैं।

७७. बिच्छू के विष में——

नीम की छाल को तम्बाकू की भाँति चिलम में रखकर पीने से बिच्छू का विष शर्तिया उतर जाता है।

७८. बर्र और मधुमक्खी के विष पर——

नीम की पत्तियों को पीसकर दंशित स्थान पर ख़ूब मलने से विषैले कीटों का काटा हुआ आराम होता है।

७९. कनखजूरे के काटे पर——

कनखजूरे के काटे हुए स्थान पर नीम की पत्तियाँ और सेंधानमक एक में पीसकर लेप करना लाभप्रद है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८०. अफ़ीम के नशे पर--

नीम की पत्तियों का स्वरस पिलाने से अफ़ीम का विष शान्त हो जाता है।

८१. सब प्रकार के विष में—

नीम की पत्तियाँ, कालीमिर्च, सेंधानमक, शहद और घी—एक में मिलाकर पिलाने से स्थावर और जंगम दोनों प्रकार के विष शान्त हो जाते हैं।

८२. कामलारोग में—

प्रातःकाल तीन माशे सोडा फाँककर, एक तोला नीम की पत्तियाँ पीस-छानकर, पाव भर पानी के साथ कुछ दिनों तक पीने से कामलारोग दूर हो जाता है।

८३. उपदंश में—

नीम की कोमल सींकों की छाल १ तोला, भाँगरा १ तोला, कालीमिर्च ११ नग—आध पाव पानी में पीसकर पीने से उपदंश शीघ्र ही आराम हो जाता है।

८४. पाण्डु में—

(१) पानी के साथ पीसकर नीम की पत्तियों का पाव भर रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलावे और किंचित् गर्म कर पीवे तो पाण्डुरोग अच्छा हो जाता है।

(२) नीम की सींकों की छाल ६ माशे, सफ़ेद पुनर्नवा की जड़ ६ माशे—दोनों चीज़ें एक छटाँक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल में पीसकर पीने से पाण्डुरोग अवश्य दूर हो जाता है।

८५. कर्णमूल में—

कच्ची निबौली खिलाने और नीम के बीजों को नीम के ही तेल में पकाकर, महीन पीसकर, फुलाया हुआ नीलाथोथा डालकर मरहम बनाकर लगाने से कर्णमूल दूर हो जाती है।

८६. पसली चलने पर—

नीम की पत्तियों को मंदी आग में थोड़ा गर्मकर रस निकालकर मलने से पसली चलने पर बहुत लाभ होता है।

८७. जूते काटने पर—

जूते काटने पर, काटे हुए स्थान पर तैल चुपड़कर, नीम की पत्तियों की राख डालना हितकारी है।

८८. पित्ती उछलने पर—

नीम की पत्तियाँ पीसकर आँवले के साथ खिलाने या नीम की छाल का काढ़ा पिलाने से पित्ती दूर हो जाती है।

८९. नहारू में—

नहारू में, नीम की पत्तियों को पीसकर गुनगुना लेप करने से नहारू अच्छा हो जाता है।

९०. अग्निदग्ध पर—

नीम की पत्तियों का रस जले हुए स्थान पर लगाने से जलन मिटकर जला हुआ आराम होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९१. ऊरुस्तम्भ पर--

ऊरुस्तम्भ पर नीम की जड़ घिसकर गरम करके लेप करना हितकारी है।

९२. फिरंग रोग में--

नीम की पत्तियों का चूर्ण १६ भाग, हरड़ का चूर्ण २ भाग, आमले का चूर्ण २ भाग, हल्दी का चूर्ण १ भाग—सबको एक में मिलाकर, अवस्थानुसार ३ से ६ माशे तक चूर्ण देने से भीतरी-बाहरी दोनों प्रकार का फिरंग रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है।

९३. बिवाई फटने पर--

नीम के तेल में मोम पिघलाकर, बिवाई में लगाने से पीड़ा दूर होकर बिवाई फटना बन्द होता है।

९४. खटमल भगाने के लिए--

नीम की पत्तियों और गन्धक की धूनी देने से खटमल भाग जाते हैं।

९५. मच्छड़ों से बचाव--

मच्छड़ों के छिपने के स्थानों पर नीम की पत्तियों का धुआँ करने से मच्छड़ मर जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९६. पतिंगों से बचाव--

नीम के तेल का दीपक जलाने से दीपक पर पतिंगे नहीं आते।

९७. जुएँ मारने के लिए--

सर में नीम का तेल लगाने से सर की जूँ-लीख मर जाती हैं।

९८. खाद के लिए--

खेत में नीम की मींगी की खाद डालने से खेत अत्यन्त उपजाऊ हो जाता है और उसमें दीमक नहीं लगती।

९९. मुख-कान्ति-वर्द्धक प्रयोग--

नीम की पत्तियाँ, अनार का बक्कल, पठानी लोध, हर्र का बक्कल, आम का छिलका—सब चीज़ें समान भाग ले पानी में पीसकर मुँह पर लगाने से झाईं, मुँहासा, कील इत्यादि दूर होकर, मुख की कान्ति बढ़ जाती है।

१००. कीटाणु-नाशक धूनी--

गन्धक, लोबान, कपूर, चन्दन, अगर सम-भाग, सबकी दूनी मात्रा में नीम की पत्तियाँ मिलाकर चूर्ण कर ले। इस चूर्ण की धूनी देने से वायु शुद्ध हो जाती है और संक्रामक रोगों के कीटाणुओं का प्रभाव दूर हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नींबू और उसके सौ उपयोग

लेखक, पं० गंगाप्रसाद गांगेय।

लेखक ने बड़े परिश्रम से हिन्दी-भाषा में इस पुस्तक का संग्रह किया है। एक सौ बीमारियाँ केवल नींबू के उपयोग से भगाई जा सकती हैं, ऐसे एक सौ नुस्खे इस पुस्तक में लिखे हुए हैं। प्रारंभ में नींबू के गुणों की प्रशंसा है। पैसे-दो-पैसे की दवा बड़े-बड़े रोगों को दूर कर सकती है। प्रायः सभी अनुभूत उपयोग लिखे गये हैं। ऐसा संग्रह नींबू के विषय में आपको और कहीं न मिलेगा। मूल्य ≡)॥

मिलने का पताः—

नवलकिशोर-प्रेस बुकडिपो,

हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE